प्रा.डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन
एम.ए.(हिंदी), एम.ए.(समाजशास्त्र),
बी.एड., पीएच.डी.,
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर ।

प्रमाण पत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रा.कु.हेमलता आप्पासोा माने ने मेरे निर्देशन में यह शोध-प्रबन्ध एम.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है । जो तथ्य इस प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं ।

निर्देशिका
हिंदी प्राध्यापिका
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर ।

दिनांक :२९: ५:१९८९ ।

प्रमाण पत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रा.डॉ.सौ. शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन में मैंने यह शोध प्रबंध , एम.फिल. उपाधि के लिए लिखा है । इस प्रबंध में प्रस्तुत की गई सभी बातें मेरी जानकारी के अनुसार सही है ।

प्रा.कु.हेमलता आप्पासो माने

स्थल : तळमावले

दिनांक :२९:५:१९८९

:- भूमिका :-

एम. फिल्. हिंदी में प्रवेश लेने के पश्चात मेरे सामने अनेकों शोध-प्रबंध के विषय थे । परंतु हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार जैनेंद्रकुमार जी के उपन्यास 'त्यागपत्र' कि नायिका 'मृणाल' के व्यक्तित्व ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मेरे मन में जैनेंद्रकुमारजी के अन्य उपन्यासों को पढ़ने की भी लालसा पैदा हुई तथा उनके नारी पात्रों के विषय में जानने की उत्सुकता रही । इसीलिए मैंने जैनेंद्रकुमारजी के उपन्यासों की नायिकाओं से भली-भाँति परिचित होने के लिए और उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण करने के लिए, शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल् उपाधि के लिए एक लघु-शोध प्रबंध प्रस्तुत करने का विचार किया । मुझे हर्ष है कि आज जैनेंद्रकुमारजी के उपन्यासों के नारी-पात्रों को जितना कुछ मैं जान सकी हूँ उनके विषय में इस लघु शोध-प्रबंध में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल्. उपाधि के लिए प्रस्तुत कर रही हूँ ।

मेरे लिए सौभाग्य की बात रही है कि इस शोध-प्रबंध का काम आदरणीय प्रा. डॉ. सौ. शशिप्रभा जैन, हिंदी विभाग, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर के मार्गदर्शन में कर सकी और उनके पथ-प्रदर्शन से ही यह शोध-कार्य पूर्ण हो सका । उन्होंने समय-समयपर योग्य मार्गदर्शन किया । अत: मैं आजन्म उनकी कृतज्ञ रहूँगी । अनेक कृतिकारों की कृतियों का अध्ययन भी मुझे लाभ प्रद हुआ, अत: उन सभी साहित्यिक प्रतिभाओं के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा दायित्व समझती हूँ ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में ~~कुल मिलाकर~~ पाँच अध्याय हैं ।

प्रथम अध्याय का शीर्षक 'जैनेंद्रजी का व्यक्तित्व और कृतित्व' है । प्रस्तुत अध्याय में जैनेंद्रजी के जीवन और उनके साहित्य के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है ।

द्वितीय अध्याय में नारी का परिचय और उसके स्वरूप को बताया है। वैदिक कालसे लेकर आजतक नारी के स्वरूप में क्या-क्या परिवर्तन आते गये और आज नारी का क्या स्थान है। इसको भी बताने का प्रयास किया है। अपने विचारों को अच्छा प्रकार से व्यक्त करने के लिए विभिन्न, धार्मिक, सामाजिक ग्रंथोंका भी सहारा लिया है।

तृतीय अध्याय में नारी के विभिन्न रूपों का विशद चित्रण किया है। पत्नी, माँ, बहन, प्रेमिका, विधवा आदि विभिन्न रूप नारी के हुआ करते हैं और किस रूप से किन विचारों को लेकर उपन्यास में ये विभिन्न रूप आये हैं। इनकी चर्चा कि है।

चतुर्थ अध्याय में नारी की भिन्न-भिन्न समस्याओं को लिया है। अबतक अनेकों उपन्यासों में नारी की स्थूल समस्याएँ ही दिखाई देती है, परंतु जैनेंद्रजी के उपन्यास की विशेषतायें रही है कि उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक स्तर पर नारी मन की सूक्ष्म से सूक्ष्म उलझन को दिखाया है। जिन समस्याओं के कारण नारी-मन अशांति दुविधा में रहता है, इसकी विस्तारसे चर्चा की है।

पंचम अध्याय उपसंहार का है। जो समूचे शोध-प्रबंध का निचोड है।

शोधकार्य पूरा करने के लिए मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, इस्लामपुर, महावीर कॉलेज, कोल्हापुर, काकासाहब चव्हाण कॉलेज, तळमावले के पुस्तकालयों से ग्रंथ प्राप्त किये अत: इन पुस्तकालयों के ग्रंथपालो ने भी काफी सहायता की। मैं उनकी भी ऋणी हूँ जिनकी सहायतासे मेरा यह संकल्प सिद्ध हुआ, उनमें से उल्लेखनीय हैं, प्राचार्य डॉ.बी.बी.पाटीलजी, डॉ.सुनीलकुमार लवटेजी, मेरे विभागाध्यक्ष गुरुवर्य प्राचार्य पी.यू. शेठ, के.बी.पी.कॉलेज के हिंदी विभाग के प्राध्यापक अर्जुन चव्हाणजी, मैं इन सब की कृतज्ञ हूँ। मेरे जीवन साथी जो पग-पग पर मुझे उत्साह और मार्गदर्शन करते रहे उनके लिए कुछ लिखना मात्र औपचारिकता ही होगा। पूज्य पिताजी का तो सदैव आशीर्वाद मिलता ही रहा भविष्य में भी अपना सफल।।

के लिए उनके आशीर्वाद की कामना करती हूँ ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध के टंकलेखन श्रीयुत्त बालकृष्ण रा. सावंत, कोल्हापुर ने किया । उनकी मैं आभारी हूँ ।

तळमावले ।
मई ,१९८९

प्रा. कु. हेमलता आप्पासो माने.

• •